की कहानियां

बिगड़ी दशा को शीघ्र अच्छा करें

❖ लेखिका ❖

फूलकली देवी मिश्रा

सहयोग राशि 6/- रुपये

आभार

कार्य छोटा हो या बड़ा, वह तब तक पूर्ण नहीं हो पाता है जब तक उसमें इष्ट मित्रों, सहयोगियों एवं शुभाकांक्षियों का योगदान न हो। मेरे मन में भी एक इच्छा थी, 'सर्वजन हिताय' की। अपने सीमित साधनों के साथ इस इच्छा पूर्ति के लिये माध्यम चुना था मैंने 'पुस्तक' को । इस 'पुस्तक' के द्वारा ही मैं मानव कल्याण करना चाहती थी। अतः सबके सहयोग से इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 'दशारानी की कहानियां' नाम से सन 1993 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन में मेरी नातिन कु. रीता का अत्यधिक योगदान रहा। विवाह पश्चात अब ये रीता अवस्थी हैं इनके पति श्री विकास अवस्थी अतिरिक्त सहायक विकास आयुक्त रीठी हैं। मेरे दूसरे नतदामाद श्री नवीन अवस्थी स्टेशन आफिसर जी.आर.पी. कटनी तथा नातिन अनीता अवस्थी ने मुझे मानसिक बल तथा प्रोत्साहन दिया अन्यथा वृद्धावस्था की ओर उन्मुख मेरा शरीर कब का टूट जाता और इस पुस्तक का लेखन व प्रकाशन संभव न हो पाता। मैं इनकी अत्यन्त आभारी हूं। आभारी हूं मैं चि. दीपक गौतम शहडोल एवं अपने पुत्र चि. हरिहरदत्त मिश्र की जिन्होने इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। पुस्तक की लोकप्रियता को देखते हुये अब यह द्वितीय संस्करण आपके हाथ में है इसके लिये आभारी हूं मैं चि. अरविन्द मिश्र की जिन्होने इसका प्रकाशन संभव बनाया है।

फूलकली देवी मिश्रा

प्रेरणा

विश्व में तीन ही वर्ग हैं जो मनुष्यों के शारीरिक व मानसिक सुख के आधार पर बनाये जा सकते हैं। उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग। प्रत्येक वर्ग परिवारों में विभक्त है। प्रत्येक परिवार का प्रथम लक्ष्य यह होता है कि परिवार शारीरिक व मानसिक रूप से सुखी रहे। इसकी धुरी के रूप में उसका मुखिया होता है जो दिन रात कड़ी मेहनत करता है चाहे वह किसी भी वर्ग का क्यों न हो, उस परिवार के अन्य सदस्य भी उसका हाथ बटाते हैं। परिवार की स्त्रियां भी कड़ा श्रम करती हैं भले ही वह श्रम ऐसा होता है जिसका आकलन नहीं हो पाता है। परन्तु इस कड़ी मेहनत के बावजूद कभी- कभी उन्हें वांछित फल प्राप्त नहीं होता है अर्थात परिवार के सुख में कमी रहती है या परिवार दुखी रहता है। व्यापार में हानि लगने से, नौकरी से हटाये जाने से , परीक्षा में फेल होने से, मन उद्विग्न हो जाता है। श्रम के बावजूद परिवार को दो जून की रोटी नसीब नहीं होती है और भूखे पेट में रातें पहाड़ सी लगती हैं। ये आंखों आंखों में ही कट जाती हैं, तो मन ग्लानि से भर जाता है। आत्महत्या का मन चलता है, जीवन निरर्थक लगता है, मनोबल टूट जाता है, हीनभावना आ जाती है, कुल मिलाकर परिवार की दशा बिगड़ जाती है। यह प्रत्येक वर्ग के साथ होता है। इसका कारण परिवार के अंदर नहीं होता है, यह बाहर होता है। परिवार के बाहर फैले समाज की सम्पूर्ण गतिविधियों का आकंलन न हो पाने से श्रम का वांछित फल प्राप्त नहीं हो पाता है। परिवेश के इस आकंलन की असंभाव्यता को हम भाग्य के रूप में जानते हैं। हम लकड़ी को काट सकते हैं, परन्तु राह में इसे छीन लेने वाले व्यक्ति का अनुमान नहीं लगा सकते हैं। हम शेयर खरीद सकते हैं परन्तु हर्षद मेहता कांड होगा और शेयर कीमतें गिर जायेंगी इसका आकंलन नहीं कर पाते हैं। हम हल चला सकते हैं परन्तु वर्षा का अंदाज नहीं लगा सकते हैं। जिन घटनाओं का आकलन हम नहीं कर पाते हैं परन्तु वे हमें प्रभावित करती हैं, उन्हें हम भाग्य के नाम पर डाल देते हैं। भाग्य हमारे चतुर्दिक फैली ऐसी शक्तियों का ही नाम है ये हमारे लिये अदृश्य है। अतः इनके कारण यदि हमारी दशा बिगड़ती है तो दशा सुधारने का कार्य भी कोई अदृश्य शक्ति ही करेगी। दशारानी उसी अदृश्य महाशक्ति का नाम है। दशारानी परिवार की बिगड़ी दशा को सुधारती हैं और दस दिन के अन्दर ही परिवार में सुख की वर्षा होने लगती है। वे सबका भला करती हैं और परिवार को सुखी व समृद्ध बनाती हैं। वे धर्म जाति से परे हैं।

मूलतः बुन्देलखंड के ग्राम्यांचलों में पूजी जाने वाली देशी दशारानी को देश के अन्य भाग भी जाने तथा उनसे लाभान्वित हों। यही आकांक्षा है। परिवार सुखी होगा तो देश समृद्ध होगा। क्योंकि इकाई से ही समग्र बनता है और परिवार देश की इकाई है।

दशारानी सबकी बिगड़ी दशा को सुधारें। लोगों के दुखों को देखकर उन्हें दूर करने की इच्छा से मुझे यह प्रेरणा प्राप्त हुई है कि मैं देवी दशारानी की पूजा की कहानियों के सम्बन्ध में यह पुस्तक लिखूं।

यह पुस्तक मेरे चिरस्मरणीय पति स्व. रामगोपाल मिश्र को समर्पित है जिनका देहावसान स. 1954 में हो गया है।

लेखिका

लेखिका का परिचय

पुस्तक की लेखिका श्रीमती फूलकली देवी मिश्रा है इनका जन्म बुन्देलखंड के जिला बांदा (उ.प्र.) के ग्राम महुवा में सुप्रसिद्ध पाण्डेय परिवार में हुआ था। जन्म की सही तिथि तो अज्ञात है परन्तु इसका वर्ष सन 1925 है तथा जन्म का माह श्रावण मास है। बांदा शहर से चित्रकूट के मार्ग पर चलें तो लगभग 12 कि.मी. की दूरी तय करके ग्राम महुआ मिलता है। कृत्रिम नहरों से सिंचित भूमि में धान के लहलहाते खेत, जामुन और आम के पेड तथा महुवा के वृक्ष इसकी पहचान है। इसी ग्राम में स्व. राम चरन पाण्डेय की तीसरी संतान के रूप में जब शिशु लेखिका का जन्म हुआ तो सारा परिवार खुशी में झूम उठा। जामुन के वृक्षों से जामुन तोड़कर खाते चचेरी बहिन दुल्लर के साथ बचपना बीता। दुल्लर चालाक थी पेड़ पर चढ़ जाती है, मीठी जामुन स्वयं खाती तथा रखती जाती थी और कच्ची नीचे खड़ी फुल्लर (लेखिका का बचपन का नाम) को फेंकती जाती थी। कहती थी ऐसी ही जामुनें लगी हैं। परन्तु एक दिन सत्य सामने आया जब दुल्लर पेड़ से गिर पड़ी और जामुनें बिखर गयीं तथा पैर में चोट भी आई। बचपन तो सिर्फ याद बनकर रह गया है। बचपन बीता, किशोरावस्था बीती और यौवन की दहलीज पर कदम रखा ही था कि कक्कू (लेखिका के पिता) को फुल्लर के विवाह की चिन्ता सताने लगी।

'गोरों (अंग्रेजों) का राज था' मेरी नानी सास (लेखिका की मां) पुनिया बताती थीं। भरपूर जमीन व मकान होते हुये भी पता नहीं क्यों गरीबी का आलम था। शायद व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि यहां का धन धान्य पश्चिम में ब्रिटेन में भरता जा रहा था। 15 वर्ष की उम्र में फुल्लर का विवाह हुआ कानपुर के समीपस्थ ग्राम 'बडी मनोह' निवासी श्री बन्दीदीन मिश्र के पुत्र रामगोपाल मिश्र से। उस समय के उर्दू मिडिल पास थे और सर्विस में पटवारी थे। ग्राम इचौली जिला हमीरपुर में पदस्थ थे। यह उनका दूसरा विवाह था। उनकी प्रथम पत्नी ग्राम बलकौरा (चंदला के पास) जिला छतरपुर की थी उनके कोई संतान भी नहीं थी कि वे अकाल काल का ग्रास हो गयीं।

15 वर्षीय फुल्लर विवाह के बाद सुखी जीवन व्यतीत करने लगी दिन, रातों में और महीने, वर्षों में बदलते गये। 2 पुत्र व 2 पुत्रियों की माँ बनी फूलकली देवी अपने पारिवारिक दायित्व का निर्वाह सुचारू रूप से कर रही थी । छोटा सा परिवार सुखी था। परन्तु भाग्य को कौन जानता है सुखी वैवाहिक जीवन के 15 वर्ष भी नहीं बीते थे कि एक दिन फूलकली देवी के पति अल्प बीमारी जो मात्र 8 दिवस के बुखार की थी, में पंचतत्व में विलीन हो गये। मानो आसमान फट पड़ा हो और फिर प्रारंभ हुआ छोटे 2 बच्चों को लिये उनकी परवरिस की चिन्ता में लिप्त फूलकली देवी के विधवा जीवन का प्रारंभ। मकान ग्राम पहरा (महोबा के पास) जिला हमीरपुर (आजकल जिला महोबा) में था। वहीं रहकर फूलकली देवी ने अपने मां के दायित्व के साथ ही पिता की सुरक्षा का भार भी उठा लिया और नन्हें बच्चों को सुख सुविधा जुटाते हुये उन्हें बड़ा किया। उन्हें पढ़ाया लिखाया और विवाह किये। दशारानी की कहानियां कहती सुनती रहीं और जीवन चलता रहा। उनका मनोबल कभी नहीं टूटा ।

उनके इस दुःख भरे जीवन काल में उनके छोटे भाई श्रीरामसेवक पाण्डेय प्रधानाचार्य आ. बजरंग इंटर कालेज बांदा, मौसेरे भाई श्री रामबिहारी दीक्षित घटहरी तथा रिश्ते में देवर श्री नवल किशोर दीक्षित ने उन्हें बड़ा सहारा दिया।

आज सम्पूर्ण परिवार समृद्ध है। और लेखिका फूलकली देवी 75 वर्ष की उम्र में नानी, दादी, परनानी बन चुकी हैं। वे प्रसन्न हैं, नाती, पनाती का मुंह देख चुकी हैं। परन्तु वृद्धावस्था की पहचान उनके शरीर पर नहीं है। कारण है उनका नियमित जीवन। आज भी वे घर के समस्त कार्य करती हैं और शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हैं। वे मेरी सास हैं। मेरी कामना है कि वे चिरायु हों।

अभिलाषा

दशारानी की पूजा विधि

दशारानी की पूजा विधि अत्यन्त सरल है। यह मनोरंजक भी है और सबसे बड़ी बात है इसमें कोई पैसा नहीं खर्च होता है। इससे अमीर व अति गरीब भी दशारानी की पूजा कर सकते हैं। एक बात और है कि इसमें किसी पंडित की आवश्यकता नहीं होती है। कम से कम 2 महिलाएं और अधिक कितनी भी हों यह पूजा आपस में ही कर सकती हैं।

प्रारम्भ- दशारानी की पूजा का प्रारंभ दशारानी के गांड़े लेने से होता है।

(1) यदि किसी गाय के पहला बछड़ा पैदा हो।

(2) यदि किसी स्त्री के प्रथम पुत्र पैदा हो।

(3) यदि किसी तुलसी के पौधे में पहली वाली निकले तो इसकी जानकारी मिलते ही शीघ्र ही कच्चे सूत की आंड़ी (बाजार में 10-15 पैसे की मिलती है) या कच्चा सूत लेकर गाय तथा बछड़ा या स्त्री तथा पुत्र या तुलसी तथा बाली दोनों को यह सूत छुल दे। और आंड़ी को रख ले।

इस आंड़ी को छोर से पकडकर चारों अंगुलियों में 9 बार लपेटे जैसे ऊन को लपेटते हैं तथा 9 बार हो जाने पर धागा तोड़ लें। यह टूटा धागा जुड़ा रहता है परन्तु इसे 9 ताग होना कहते हैं इस धागे में एक ताग अपनी धोती के छोर से निकाल कर मिला लें। इस प्रकार 10 ताग हो गये (9 ताग का 1 धागा व धोती के छोर के 1 ताग का 1 धागा- कुल 2 धागे) इन 10 तागों को किसी पवित्र स्थान या घर के पूजा स्थल में रख दें। इसकी आवश्यकता दसवें दिन पड़ेगी। इसी को दशारानी के गॉड़े लेना कहते हैं।

शहरों में किसी अस्पताल की नर्स से जानकारी ले ले तथा किसी डेरी वाले से कह दे जिससे वे प्रथम पुत्र या प्रथम बछड़े की जानकारी दे दें। तुलसी का पौधा तो हर घर में होता है। उसमें निकली बाली को जब पहली बार देखें तो यह मान लिया जाता है कि मानो अभी यह बाली निकली है और दशारानी के गांड़े लिये जा सकते हैं। ग्रामों में गाय हरेक के पास रहती है या किसी गर्भवती महिला की जानकारी रखें।

दशारानी के गाड़े लेना कठिन कार्य नहीं है। मात्र कच्चा सूत छुलाना है तथा 9 ताग में अपनी धोती का एक ताग मिलाना है तथा इन दोनों को रख लेना है।

उनके इस दुःख भरे जीवन काल में उनके छोटे भाई श्रीरामसेवक पाण्डेय प्रधानाचार्य आ. बजरंग इंटर कालेज बांदा, मौसेरे भाई श्री रामबिहारी दीक्षित घटहरी तथा रिश्ते में देवर श्री नवल किशोर दीक्षित ने उन्हें बड़ा सहारा दिया।

आज सम्पूर्ण परिवार समृद्ध है। और लेखिका फूलकली देवी 75 वर्ष की उम्र में नानी, दादी, परनानी बन चुकी हैं। वे प्रसन्न हैं, नाती, पनाती का मुंह देख चुकी हैं। परन्तु वृद्धावस्था की पहचान उनके शरीर पर नहीं है। कारण है उनका नियमित जीवन। आज भी वे घर के समस्त कार्य करती हैं और शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हैं। वे मेरी सास हैं। मेरी कामना है कि वे चिरायु हों।

अभिलाषा

दशारानी की पूजा विधि

दशारानी की पूजा विधि अत्यन्त सरल है। यह मनोरंजक भी है और सबसे बड़ी बात है इसमें कोई पैसा नहीं खर्च होता है। इससे अमीर व अति गरीब भी दशारानी की पूजा कर सकते हैं। एक बात और है कि इसमें किसी पंडित की आवश्यकता नहीं होती है। कम से कम 2 महिलाएं और अधिक कितनी भी हों यह पूजा आपस में ही कर सकती हैं।

प्रारम्भ- दशारानी की पूजा का प्रारंभ दशारानी के गांड़े लेने से होता है।

(1) यदि किसी गाय के पहला बछड़ा पैदा हो।

(2) यदि किसी स्त्री के प्रथम पुत्र पैदा हो।

(3) यदि किसी तुलसी के पौधे में पहली वाली निकले तो इसकी जानकारी मिलते ही शीघ्र ही कच्चे सूत की आंड़ी (बाजार में 10-15 पैसे की मिलती है) या कच्चा सूत लेकर गाय तथा बछड़ा या स्त्री तथा पुत्र या तुलसी तथा बाली दोनों को यह सूत छुल दे। और आंड़ी को रख ले।

इस आंड़ी को छोर से पकडकर चारों अंगुलियों में 9 बार लपेटे जैसे ऊन को लपेटते हैं तथा 9 बार हो जाने पर धागा तोड़ लें। यह टूटा धागा जुड़ा रहता है परन्तु इसे 9 ताग होना कहते हैं इस धागे में एक ताग अपनी धोती के छोर से निकाल कर मिला लें। इस प्रकार 10 ताग हो गये (9 ताग का 1 धागा व धोती के छोर के 1 ताग का 1 धागा- कुल 2 धागे) इन 10 तागों को किसी पवित्र स्थान या घर के पूजा स्थल में रख दें। इसकी आवश्यकता दसवें दिन पड़ेगी। इसी को दशारानी के गॉड़े लेना कहते हैं।

शहरों में किसी अस्पताल की नर्स से जानकारी ले ले तथा किसी डेरी वाले से कह दे जिससे वे प्रथम पुत्र या प्रथम बछड़े की जानकारी दे दें। तुलसी का पौधा तो हर घर में होता है। उसमें निकली बाली को जब पहली बार देखें तो यह मान लिया जाता है कि मानो अभी यह बाली निकली है और दशारानी के गांड़े लिये जा सकते हैं। ग्रामों में गाय हरेक के पास रहती है या किसी गर्भवती महिला की जानकारी रखें।

दशारानी के गाड़े लेना कठिन कार्य नहीं है। मात्र कच्चा सूत छुलाना है तथा 9 ताग में अपनी धोती का एक ताग मिलाना है तथा इन दोनों को रख लेना है।

कहानियां- अब प्रारम्भ होता है कहानियों का सिलसिला। पहले दिन राजा नल की कहानी एक स्त्री कहती है तथा अन्य स्त्रियां सुनती हैं यदि एक ही स्त्री ने गाँड़े लिये हैं तो वह किसी बच्चे या किसी बिना गांड़े लिये स्त्री को भी कहानी सुना सकती है। दूसरे दिन, तीसरे, चौथे, पांचवे, छठवें, सातवें, आठवें एवं नवे दिन कहानियां कही व सुनी जाती हैं। प्रतिदिन एक कहानी कही सुनी जाती है। 9 दिन तक कहानियों के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है।

दसवां दिन- दसवें दिन नहा धोकर दशारानी की पूजा करें। उपवास रखें।

पूजाविधि- एक पीपल या पान का पत्ता ले। पत्ते के ऊपर चंदन से दशारानी बनाये। दस बिन्दी रख दें। गांड़ो (10 ताग) को जल से धोकर फिर दूध से धोकर उसी पत्ते पर रख दें। उस पर चन्दन, चावल व फूल चढ़ायें। पत्ते को पट्टे पर या पवित्र स्थान बनाकर उस पर रख कर यह पूजा करें। धूप पत्ती लगा दें। थोड़ा सा हवन कर दें।

फिर वहीं बैठकर पहले दिन कहे जाने वाली राजा नल की किस्सा अंतिम दिन भी कहे।

फिर निम्न वाक्य को दस बार कहें।

'पीपर से उत्तरीं दशारानी, दशा ध्याऊं, दशा मनाऊं'

दशारानी का दीन सब कुछ पाऊं, भागो फिरै दलिद्दुर फैली फिरै दशारानी।

इस वाक्य को कहने के बाद उसी पत्ते के दस परिक्रमा लगावें।

फिर जितनी स्त्रियां पूजा में शामिल हैं वे सब अपने- अपने गांड़े पान / पीपल के पत्ते पर रख दें। (यह स्पष्ट कर दूं कि हर स्त्री को अलग- अलग पूजा करना आवश्यक नहीं है। कई स्त्रियां मिलकर एक ही स्थान पर पीपल पान के पत्ते पर पूजा कर सकती हं) फिर पीपल के पत्ते को समेट लें। समेटते ही उपासी स्त्रियां मौन हो जायें। थोडी सी गीली मिट्टी ले लें, उसकी लोंदी बना लें। इस पूजा वाले पीपल के पत्ते को इसी मिट्टी की लोंदी के अंदर रख लें और उस मिट्टी की लोंदी को दोनों कन्धों में दस बार छुलायें। अर्थात उसे भेट लें। सभी स्त्रियां दस बार भेंट लें। फिर कोई एक स्त्री उस मिट्टी की लोंदी को लेकर जाकर किसी कुएं में डाल दें। (सिरा दें) वापस लौटते समय पीछे को न देखें। मौन भी रहना ही है। उसके लौटकर आने के बाद पंचामृत सभी स्त्रियां ले लें। गांड़े जिस दूध से धायें हैं वही रक्खा रहता है वही पंचामृत है।

पंचामृत लेने के बाद मौन तोड दें तथा बोलने लगे, इसके पहले तक सभी मौन रहेंगी।

इसके बाद फलाहार कर सकती हैं परन्तु अनाज व नमक अभी न खायें.

भोजन- दशारानी की पूजा हो चुकती है तब पानी के फरा गुलेला बना लें और घी शक्कर से खा लें. 10 फरा व 10 गुलेला खायें। यदि न खा सकें तो गाय को खिला दें. इन्हें मौन होकर खायें. थाली धोकर रखें. फिर मौन तोडें।

निर्माण- आटे को गूंथकर पूड़ी जैसा बेले और उन्हें पानी में सिरा लें (घी तेल न सिरायें) ये फरा है। इसी प्रकार आटे के छोटे- छोटे दस गुलेला बनायें इन्हें भी पानी में सिरायें ये गुलेला हैं।

दसवें दिन इसके अतिरिक्त और कुछ न खायें। यही दशारानी की पूजा है यहीं पर पूजा समाप्त हो जाती है।

1- राजा नल

एक राजा नल थे उनकी रानी का नाम दमयन्ती था। एक दिन राजा शिकार खेलने गये जब वे शिकार खेलकर लौटने लगे तो उन्हें रास्ते में कुछ स्त्रियां आपस में किस्से कहते हुयी दिखीं। राजा भी उनके पास जाकर कथा सुनने लगे। कथा समाप्त होने पर राजा ने उन स्त्रियों से इसका उद्देश्य पूछा तब वे बोली कि यह दशारानी का किस्सा है। जब तुलसी मेंपहली बाली निकले, गाय पहले बछडे को जन्म दे तथा घर में किसी स्त्री के पहला लडका हो तो तुलसी, गाय बछड़ा तथा जच्चा- बच्चा को एक कच्चे सूत का धागा छुलाकर और डोरे के नौ ताग कर लेते हैं, तथा एक ताग अपनी साड़ी का मिलाकर दस ताग कर दशा रानी के गाडे ले लिये जाते हैं। उस दिन से दस दिन तक दशारानी के माहात्म्य के किस्से कहे और सुने जाते हैं। सो वही किस्से हम लोग कह रही थीं। यह सब सुन राजा ने इसकी पूजा पाठ तथा वृत और भोजन आदि के बारे में पूछा तब वे बोलीं कि दसवें दिन पान या पीपल के पत्ते में चन्दन से दशारानी का चित्र बनाकर चन्दन, चावल हल्दी, फूल चढ़ाकर इनकी पूजा की जाती है तथा उस दिन वृत रख पानी के पन फरागुलेला खाये जाते हैं। राजा ने इन्हें बनाने की विधि पूंछी तब वे बोली कि हम आटे को सानकर उसकी गोल- गोल लोई बनाकर दस पूड़ी की तरह बेल लेते हैं तथा दस गोल- गोल बनाकर पानी में उाल लेते हैं गाय के लिये एक अलग से बनाते हैं। इन्हें पूजा करने के पश्चात घी शक्कर या गुड़ के साथ मौन होकर खा लेते हैं। यह सारा वृतान्त सुन राजा ने भी अपनी रानी के लिये उनसे नौ ताग ले लिये और उनसे विदा ले वे अपने महल की ओर बढ़ चले। अपने घर पहुंच कर राजा ने रानी को रास्ते कीसारी घटना कह सुनाई तथा उन स्त्रियों से लिये हुये नौ ताग देकर उनसे भी दशारानी के गाडा लेने को कहा तथा रानी ने इसका परिणाम जानना चाहा तो राजा बोले कि इससे सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। घर धन धान्य पुत्र पौत्र आदि सभी सुखों से पूर्ण होता है। यह सब सुन रानी तुनक कर बोली कि मेरे पास किस चीज की कमी है और फिर मुझे दूध की साढी घी की माड़ी तो पचती नहीं है ये पानी के पन फरागुलेला कौन खायेगा। यह सुनकर उन्होंने वह ताग फेंक दिया। राजा उसे उठाकर कुयें में डाल आये।

दूसरे दिन जब राजा रानी सोकर उठे तो सब कुछ देखकर अचम्भित रह गये। राजा लंगोटी लगाये रानी कमली ओढे थी। हाथी हथसाल से घोडे घुड़साल से गायब हो गये। धन धान्य सब समाप्त हो गया। राजा और रानी दोनों भूखों मरने लगे तो वे अपना घर छोड भोजन की खोज में बाहर निकल गये।

चलते - चलते रास्ते में एक जगह उन्हें खेत में हरे- हरे चने लगे हुये दिखे उन्होंने सोचा चलो यही खाकर अपनी भूख मिटाई जाये पर जैसे ही उन्होंने चनों को स्पर्श किया कि वे लोहे के हो गये । रानी बोली कि चलो आगे चलें। हमारी दशा ही खराब है। फिर उन्हें एक जगह लाल - लाल तरबूज दिखे उन्होंने जैसे ही खाने को किया तो वे काठ के हो गये। फिर आगे चले तो एक स्थान पर सुरहा गऊ खड़ी थी राजा बोले चलो रानी न हो तो एक - एक चुल्लू दूध पीकर ही भूख प्यास बुझाई जाये। तो जैसे ही उन्होंने दूध पीने को

किया कि वह खून हो गया। अब वे और आगे बढे तो उन्हें एक तालाब दिखाई दिया। इस पर रानी की भूख प्यास से बुरी हालत देख राजा बोले थोड़ी देर यहीं नहा धोकर विश्राम किया जाये और मछली को भूनकर उसी का भोजन किया जाये। रानी को भी यह उचित लगा। राजा ने मछली मार- मार कर रानी को भूनने के लिये दे दी और स्वयं स्नान करने के लिये चले गये जब राजा स्नान कर खाने के लिये बैठे कि वे भुनी हुई मछली एक-एक कर तालाब में चिटक गयी। यह देख रानी बोली की हमारी दशा ही बिगड़ी है। थोड़ा विश्राम कर वे आगे बढ़े तो राजा के एक मित्र का गांव आया उन्होंने अपने आनेकी खबर भिजवा दी। तो मित्र ने कहा वे जैसी हालत में हैं चले आवें और मित्र ने राजा को अपनी चित्रसारी में डेरा दे दिया। जब वे रात्रि को सो रहे थे तो मित्र की पत्नी का नौलखा हार जो एक खूटे से उसी चित्रसारी में टंगा था रात्रि में अचानक वह खूंटा हार निगलने लगा वह देखते ही राजा ने सोचा कि कहीं चोरी का नाम उन पर न लग जाये रात्र को ही रानी को साथ लेकर वहां से भाग गये। अब उन्होंने अपनी बड़ी बहिन जो बहुत ही रईस थी उसे अपने आने की खबर दी जब उनकी बहिन को पता चला कि वे टूटी पनही फटी परदनी में हैं तो उन्होंने सीधे अपने नौकर से कह दिया कि उनसे जाकर कह दो कि यहां हमें लजवाने न आए और एक कुम्हार के घर उनका डेरा जलवा दिया। स्वयं मिलने भी नहीं गईं और उन्हें बचा खुचा भोजन किसी के हाथ भिजवा दिया। रानी ने वह सब खाना वहीं कुम्हार के आवा में गाड़ दिया और वहां से आगे चले तो अपनी छोटी बहिन जो अत्यन्त गरीब थी उसके यहां अपने आने की खबर दी तो वह बोली कि उनसे कह दो वे जैसे भी हों मेरे घर चले आवें जैसे वे मेरे तब थे वैसे ही अभी हैं। उसके पास अपने भाई को खिलाने के लिये कुछ नहीं था तो वह अपने दोनों बच्चे गिरवी रख कुछ खाने का प्रबंध किया। राजा उसकी गरीबी देखकर वहां से भी चल पड़े। चलते- चलते वे एक ऐसे राज्य में पहुंचे जहां के राजा की चोरी हो गयी थी और चोर चोरी का माल इनके पास छुपाकर भाग गये सुबह वहां के राजा ने इन्हें चोर समझकर कारागार में डलवा दिया।

एक दिन जब रानी जेल की खिड़की से बाहर की ओर झांक रही थी तभी उन्हें एक व्यक्ति एक गाय और उसका बछड़ा लिये हुये दिखाई दिया। उन्होंने उस व्यक्ति को पास बुलवाकर पूछा कि क्या इस गाय ने पहले बछड़े को जन्म दिया है? तो उसके हां कहने पर वे राजा से बोली कि नौ ताग तुम अपनी पगिया को दे दो और दसवां मैं अपनी छोती का ले लूंगी तब राजा बोले कि तब तो तुम्हें दूध की साढी घी की माड़ी नहीं पचती थी और अब यहां बारह साल से पड़े हैं न नहाया न धोया तो तुम यह सब कैसे कर पाओगी। फिर भी रानी के बहुत कहने पर राजा मान गये और उन्होंने नौ ताग अपनी पगिया के दिये और दसवां रानी ने अपनी धोती का मिलाकर उसे गाय बछड़े को छुलाया और उस दिन से रोज वे एक किस्सा कहने लगीं रानी इस खिड़की से कहती राजा अपनी खिड़की से सुन लेते।

जब दसवां दिन आया तब जिस राजा की चोरी हुई थी उसे दशारानी ने स्वप्न दिया

कि जो तुम्हारी कारागार में पड़े हैं उन्हें जल्दी ही निकाल दो नहीं तो तुम्हारा राज्य विनाश कर दूंगी इस पर राजा उसी समय जाकर उनसे पूछने लगे कि अपना असली रूप बताओ तुम कौन हो और कहां से आए हो तब राजा नल ने सब बता दिया। उन्हें जेल से निकाल दिया गया राजा को नहलाया धुलाया गया और रानी नदी में नहाने के लिये चली गयीं। उन्होंने वहां नहा धोकर बालू के फरागुलेला बनाकर जैसे ही खाने को किया तभी दशारानी एक बुढ़िया का भेष धारण कर रानी के पास जाकर बोलीं कि ये तुम क्या कर रही हो पहले तो तुम्हे दूध की साढी घी की माड़ी नहीं पचती थी और अब ये बालू के फरागुलेला पच जायेंगे तब रानी सब समझ कर उनके चरणों में गिर पड़ी इस पर वे (दशारानी) बोली कि जाओ तुम्हारा सब कुछ पहले जैसे होगा। रानी राजा के पास आयीं तो वहां छप्पन प्रकार के भोजन तैयार थे तो रानी बोलीं कि हम तो पानी के फरागुलेला खायेंगे। भोजन आदि कर राजा रानी जब वहां से चलने लगे तो वहां के राजा की सारी दौलत उनके पीछे चलने लगी तब रानी ने एक बार पलटकर देखा और दूध का कुल्ला फेंका और बोली कि जितना हमारा हो वही हमारे साथ आये बांकी सब यहीं रह जाये। वैसा ही हुआ। वहां से वे धन- धान्य लेकर जब लौट रहे थे तो वे अपनी गरीब बहिन के यहां गये वह उनसे उसी प्रेम से मिली। राजा ने अपनी बहन को खूब सारी धन दौलत दी जिससे वह अपने बच्चे जो गिरबी रख दिये थे छुड़ा लाई। खा पीकर राजा अपनी बडी बहन के यहां गये इस बार उसने उन्हें अपने महलों चले आने को कहा तो राजा बोले कि जब हमपे विपत्ति पड़ी थी तब तो एक कुम्हार के घर में ठहराया था इस बार भी हम वहीं ठहरेंगे। इस बार उनकी बहन स्वयं उनसे मिलने आई तथा साथ में छप्पन प्रकार के पकवान लाई। रानी ने जो भोजन पिछली बार आवे में गाड़ दिया था वह सब सोने का हो गया वह सब अपनी बहन को दे उससे भी विदा ली। आगे चलने पर उन्हें अपने मित्र मिले इस बार फिर उन्होंने राजा को अपनी चित्रसारी में डेरा दिया रात को देखा क्या कि वही नौलखा हार जो खूंटा निगल गया था। उगलता चला आ रहा है। तो उन्होंने अपने मित्र को बुलाकर दिखाया। कि देखो इस कारण हम पिछली बार तुम्हारे यहां से चले गये थे। वे अपने मित्र से विदा ले आगे बढे तो वही तालाब मिला राजा जब नहा धोकर आये तो वही भुनी हुई मछली तालाब से चिटक- चिटक कर राजा रानी के पास आ गयीं। उन्होंने थोड़ा उन्हें भी खाया रानी बोलीं कि अब हमारे अच्छे दिन आ गये हैं। पिछली बार यहीं भुनी मछली तालाब में चिटक गयी थीं। अब वे और आगे गये तो सुरहा गऊ निचुड़ रही थी थोडा थोडा दूध राजा रानी पीकर और आगे बढे तो उन्हें एक जगह वही तरबूज जो काठ के हो गये थे। रखे मिले उन्हें भी थोड़ा खाया और आगे जाने पर खेत में हरे- हरे चने लगे थे एक- एक मुट्ठी उन्हें खाकर वे अपने राज्य वापस आये वहां आने पर देखा तो सब कुछ जैसा का तैसा था। राजा नल को खूब इज्जत के साथ अपने महलों ले जाया गया और रानी भी बहुत खुश हुई उनकी धन लक्ष्मी सब वापस आ गयी हाथी हथसाल में घोड़े घुड़साल में सही सलामत थे। यह सब देखकर रानी हमेशा दशारानी के गाँड़े लेती रही तथा उनके राज्य में सभी प्रकार के सुख आ गये और फिर कोई विपत्ति कभी नहीं आई।

2- दिया हंसो

एक राजा थे वे शिकार खेलने गये तो राह में उन्हें कुछ स्त्रियां किस्से कहते हुये दिखीं वे पास गये और उनसे पूछा क्या कर रही हैं तब वे स्त्रियां बोलीं कि हम लोग दशारानी की किस्सा कह रही हैं तब राजा ने इसका सब वृतान्त उनसे पूछा तथा उनसे नौ ताग ले घर की ओर चल पड़े। घर जाकर उन्होंने वह ताग अपनी रानी को दिये रानी ने उनसे भोजन इत्यादि के बारे में पूछा तो राजा ने कहा कि पानी के फरागुलेला खाये जाते हैं तो रानी ने सीधे मना कर दिया।

रात को जब वे सो रही थी तो उनकी चारपाई में कहीं कपास की कच्ची कली रह गयी होगी जो उन्हें गड़ने लगी तो उनके पास ही जो दिया जल रहा था वह हंसने लगा। रानी बोली कि भाई तुम हंस क्यों रहे हो तो दिया बोला कि अभी तो तुम्हें कपास की एक कच्ची कली गड रही है और जब बारह वर्ष कंकडों, पत्थरों में चलना पड़ेगा तब क्या करोगी। तब राजा ने कहा 'हमारे सामने?' तब दिये ने कहा कि हां। फिर राजा ने सोचा कि हम अपने सामने ऐसा नहीं देख सकते और एक कटहरा (अंदर से खोखला) बनवाया। तथा रानी को सजा संवारकार उसी कटहरे में बिठा दिया तथा खाने पीने को रख उसे पानी में बहा दिया। बहते बहते वह उस गांव में पहुंचा जहां राजा की बहन ब्याही थी वे भी काफी धनवान थे तथा राजा का बहनोई भी वहां का राजा था। एक बार राजा के बहनोई वहां घूम रहे थे कि किनारे पर लगा हुआ एक कटहरा देखा तो उन्होंने उसे केवटों से पकड़ा लिया तथा बढ़ई को बुलाकर उसे काटने के लिये कहा।

जब वह उस कटहरे को काटने लगा तो अंदर से रानी कलशा बजा देती थी जब दो तीन बार ऐसा ही हुआ। तब राजा ने आदेश दिया कि अन्दर कोई है इसे धीरे- धीरे काटो। जिससे इसके अंदर जो कोई भी होगा वह सही सलामत बाहर आ जायेगा। जब बढ़ई ने उसे काटा तो अंदर से एक सजी संवरी औरत (रानी) निकली। उसे राजा अपने घर ले गये तथा उसे उनकी पत्नी ने देखा तो जल गयी कि राजा दूसरी रानी लाये हैं तो उसने उसके गहने कपडे सब उतरवाकर एक फटी पुरानी साड़ी दे दी और दिन रात उससे ईंट पत्थर का काम कराती। एक समय खाना देती और जब रात को वह काम करके थक जाती तो वहीं ईंट पत्थर के ऊपर सो जाने के लिये कह देती। इसी तरह रात दिन कंकड़ों पत्थरों में उसने बारह वर्ष काट दिये इसी बीच उसे दिये की बात याद आई तो उसने सोचा कि दिये ने सत्य ही कहा था मैंने दशारानी के गाड़ा नहीं लिये थे उसी कारण आज मुझे इतना कंकड़ों में सोना पड़ रहा है।

एक दिन ऐसे ही वह पत्थर ढो रही थी कि उसे एक अहीर गाय और बछड़ा ले जाते हुये दिखा उसे देखते ही रानी उसके पास गई और उससे पूछा कि क्या ये गाय पहला बछड़ा व्यायी है तो अहीर ने कहा कि हां। तो उसने तुरन्त ताग को गाय और बछड़े में छुलाकर दशारानी के गाड़ा ले लिये। दसवें दिन जब पूजा थी तो राजा जी अपनी बहन के हालचाल पूंछने के लिये उनके घर गये तो उनका खूब स्वागत सत्कार हुआ और उसी रानी से नौकरानी की तरह काम तो लेती ही थी सो उसने राजा के पैर दबाने के लिये भेज दिया.

जब वह राजा के पांव दबाने लगी तो उसने देखा कि राजा के माथे में चन्द्रमा पैरों पर पदम है तो उसके पति के भी उसे थी यह देखकर उसे रोना आ गया। वह रोती जाये और पांव दबाती जाये। उसके आंसू राजा के पैर में चू रहे थे। राजा ने उसे रोता देखकर उससे कहा कि यदि तुम्हें कोई परेशानी हो तो तुम मेरे पांव मत दबाओ। तब भी वह कुछ नहीं बोली और उसी प्रकार रोती जाये और पैर दबाती जाये। तो राजा ने उसके रोने का कारण पूछा तब रानी बोली कि महराज जिस प्रकार आपके माथे चन्द्रमा पांव पदम है उसी प्रकार मेरे पति के भी थी। तो राजा ने उसके पति के बारे में पूछा और उसकी यह हालत कैसी हुई यह भी पूछा। तब रानी ने पूरा वृतान्त राजा को बताया।

उसकी पूरी कहानी सुनकर राजा उसे पहचान गये और बोले कि तुम मेरी ही रानी हो मैं तुम्हारा पति हूं। यह मेरी बहन का घर है जो तुमसे इस प्रकार काम ले रही है। यह सब उसी दशारानी का फल है। यह सब बात जाकर राजा ने अपनी बहन और बहनोई को बताई। तो वे लोग रानी से क्षमा मांगने लगे। तब रानी बोली इसमें आपका कोई कुसूर नहीं है मैंने दशारानी के गाडा लेने से इंकार कर दिया था सो मुझे यह सब तो भोगना ही था। आपके यहां न सही तो कहीं और भोगती।

इसके बाद राजा रानी को उनके बहन और बहनोई ने खूब दिया और राजा उनसे विदा लेकर अपने राज्य लौट आये तथा सुख चैन से रहने लगे। तब से रानी हमेशा दशारानी के गाड़ा लेती और अंतिम दिन उनकी विधिवत पूजा करती थी।

3- राजा वीर विक्रमादित्य

एक बुढ़िया थी उसका कोई नहीं था वह दशारानी के गाड़ा लिया करती थी और हमेशा यही मनाया करती थी कि महारानी हमें कोई आड़ दो। एक बार उसकी हाथ की गद्दी में एक फोड़ा हुआ बड़ा होता गया और नौ महीने होने के बाद फूटा तो उसमें से एक मेढ़क निकला। तो पड़ोस की सभी औरतें उसका मजाक उड़ाने लगीं और कहने लगीं कि इसे झाड़ कर फेंक दो इसने नौ महीने परेशान किया है। तो वह बुढ़िया बोली कि इसे नहीं फेंकना है यही समझ लूंगी कि दशारानी ने मुझे एक वुलसिखिया दिया है।

एक बार वहां के राजा अपनी बेटी का स्वयंवर रचा रहे थे। सब जगह मुनादी करा दी गयी। जब यह बात बुढ़िया के मेढक ने सुनी तो वह भी राजकुमारी के स्वयंवर में जाने की जिद करने लगा। तब बुढ़िया ने कहा तुम वहां कहां जाओगे वहां बहुत बड़े- बड़े वीर पुरुष और योद्धा पहुंच रहे हैं। इतनी भीड में तुम्हें कोई कुचल डालेगा तो मैं क्या करूंगी। तब भी मेढक नहीं माना और किसी प्रकार बुढ़िया से जिद करके वह स्वयंवर में चला ही गया।

मेढक राजा के महलों पहुंचा वहां चारों ओर बड़े- बड़े सिंहासनों में देश विदेश से आये हुये वीर पुरुष और राजकुमार बैठे थे तथा कुछ लोग स्वयंवर की व्यवस्था में लगे हुये थे। मेढक वहां पहुंचकर एक तरफ कंडों (गोबर) की बटिहा के ऊपर बैठ गया। इधर ऐरावत आया उस पर राजकुमारी जी हाथों में गजरा लिये हुये सवार हुईं। जाते समय उन्होंने ऐराबत से कहा कि हे गणेश जी की मूर्ति ऐरावत पथ हांथी, जहां राजा वीर

विक्रमादित्य का अवतार हो वहीं सिर झुकाना और कहीं मत झुकाना।

अब ऐरावत वहां से चलने लगा और चलता हुआ तथा अनेक राजाओं के पास से निकलता हुआ वह उस जगह जाकर झुक गया जहां मेढक बैठा हुआ था। राजकुमारी ने मेढक के आगे सर झुकाता हुआ देखकर मेढक के ऊपर वरमाला पहना दी। सभी राजा उसका मजाक उड़ाने लगे। तब राजा बोले कि हमारी बेटी से भूल हो गयी है। उसे दो मौके और दिये जायेंगे। ऐरावत फिर चला और घूम फिरकर फिर वहीं जाकर सर झुका दिया। तीसरी बार भी जब यही हुआ जो राजा अपनी बेटी से बहुत नाराज हुये। और कहा कि इसे बिना कुछ दिये विदा कर दो। डोला सजा दो और उसमें बेटी को बिठालकर जहां तक यह मेढक जाये वहीं डोला रखकर चले आना। अब मेढक आगे- आगे उचकता हुआ चला तथा डोला उसके पीछे- पीछे।

इधर बुढ़िया बहुत परेशान थी। वह लौटते हुए सभी लोगों से पूंछती थी कि कहीं हमारे मेढक को किसी ने देखा है तो उन लोगों ने बताया कि दायी तुम्हारे मेढक की तो शादी हो गयी है राजा की बेटी के साथ और मजाक उड़ाता हुआ वह चला गया। इतने में बुढ़िया को अपना मेढक दिखाई पड़ा और पीछे डोला भी दिखा। पास आने पर वह अपनी दायी से बोला कि दायी 'उरिया डार बहू निहार' तब दायी दौड़ कर अंदर गई सूपा सजाकर लाई उरिया डाली तथा बहू को अंदर ले गई।

अब रोज रात को राजा वीर विक्रमादित्य अपनी मेढक की अंग रखी उतारकर अपनी चारपाई के सिरहाने टांग देते थे और रात को खूब हंसते थे। बुढ़िया को जब उनकी हंसी और बातें सुनाई दी तो एक दिन उसने अपनी बहू से पूछा कि ये रात को तुम किससे हंसती बोलती हो और ये पान की पीक कौन थूकता है। तब बहू ने कहाकि यदि आपको देखना है जैसा मैं कहूं वैसा कीजिए। जब रात हुई तो राजा ने फिर से अपनी अंगरखी उतारकर टांग दी। जब राजा सो गये तो वह चुपचाप उठी और अंगरखी उतारकर दायी को दे दी और कहाकि इसे जला दो तो तुम्हें अपने बेटे राजा वीरविक्रमादित्य के दर्शन हो जायेंगे। दायी ने उसे जला दिया।

जब राजा सुबह उठे तो बहुत परेशान हुये। सब जगह अंगरखी ढूंढने लगे तब रानी ने सारी बात राजा को बता दी। इसके बाद राजा वीर विक्रमादित्य अपनी दायी के सामने अपने असली रूप में आ गये उन्हें देखकर बुढ़िया बहुत खुश हुई। अब उनकी झोपड़ी की जगह एक महल खड़ा हो गया। धन दौलत नौकर चाकर सब कुछ हो गया।

ये खबर राजकुमारी के पिता के पास भी पहुंची तो राजा ने उन्हें बुलाया और अपनी बेटी की समझदारी पर खूब प्रसन्न हुए। इस बार राजा ने भी उन्हें खूब दिया और अपनी बेटी को बहुत अच्छी तरह से विदा किया। बुढ़िया ने अपनी बहू से कहा कि ये सब दशारानी का प्रताप है। तब से उसकी बहू भी दशारानी के गाड़ा लेने लगी।

4- आंवले का दान

एक सेठ सिठानी थे। उनके चार लड़के तथा चार बहुयें थी। सिठानी बहुत पुजारिन और दानपुण्य करने वाली स्त्री थी वह वर्ष भर के सभी व्रत, पूजा पाठ, दान दक्षिणा आदि किया करती थी। तथा उसका रोज का नियम था कि वह चार सोने के आवलों का दान एक ब्राम्हण को जरूर दिया करती थी। और दशारानी के गाड़े वह हमेशा लिया करती थी।

कुछ दिन ऐसा ही चलते रहने के बाद एक दिन उसकी सबसे बड़ी बहू अपने पति से बोली कि तुम्हारी मां रोज पांच सोने के आंवलों का दान देती हैं इस तरह तो एक दिन इस घर का सब सोना खत्म हो जायेगा उनसे कहो कि वे चांदी का दान दिया करें। सास वैसा ही करने लगीं अब सिठानी रोज पांच आवला चांदी के आंवलों का दान देने लगी एक दिन उसकी दूसरी बहू बोली कि अम्मा जो आप रोज पांच चांदी ब्राम्हण को दे देती हैं इससे घर की सारी चांदी समाप्त हो जायेगी। आप कल से पीतल का दान दिया करें। दूसरे रोज से सेठानी पांच पीतल के आवले दान करने लगी। अब एक दिन उसकी तीसरी बहू उससे आकर बोली कि सासू जी आप तो इस घर से सबपीतल खत्म किये दे रही है हम लोगों के लिये क्या बचेगा। तब सेठानी बोली ठीक है बहू कल से मैं दान में पांच तांबे के आवले दे दिया करूंगी। और वह रोज तांवे के आंवले दान करने लगी। कुछ दिन और बीते तो चौथी बहू बोल पड़ी कि इस तरह से रोज दान दक्षिणा करने से तो घर का सब तांबा समाप्त हो जायेगा। तब सेठानी ने सेठ से कहा कि चलो अब हम इस घर में नहीं रहेंगे। जिस घर में हमें दान करने का अधिकार न हो उस घर में क्या रहना। सेठ सिठानी उसी दिन वह घर छोड़कर बाहर निकल गये।

चलते- चलते वे एक तालाब के समीप पहंच गये । दोनों ने नहाया। पूजा पाठ किया। तब वहीं सेठ को कुछ आंवले पड़े हुये मिले। उसने वे आंवले उठा कर सेठानी को दे दिये। तभी रोज की ही तरह दान के ही समय एक ब्राम्हण आया। सेठानी ने जब वे आंवले उस ब्राम्हण को दिये तो वे सब सोने के हो गये। दान के अलावा बचे हुये आंवलों से उन्होंने अपना एक मकान बनवाना प्रारंभ करा दिया।

इधर उसके लड़के और बहुओं के वहां गरीबी आ गयी। वे भूखों मरने लगे। तो वे भी काम की तलाश में बाहर निकल पड़े। चलते चलते वे वहीं पहुंच गये जहां सेठ सिठानी का मकान बन रहा था वहां कार्य चालू था। उन्हें भी वहीं काम मिल गया।

अब एक दिन एक अहीर बछड़ा लिये हुए निकला तो उन चारों बहुओं ने ये निर्णय लिया कि हम भी दशारानी के गाड़ा ले लेते हैं हमारी सास भी यही किया करती थीं तभी तो उनके समय घर में कभी सोने चांदी की कमी नहीं आई थी। यह सोचकर उन्होंने भी गाय और बछड़े में ताग छुलाकर दशारानी के गाड़ा लिये। वे मिट्टी पत्थर ढोती जाती और किस्से भी कहती जातीं। इस तरह से नौ दिन व्यतीत हुये। दशवें दिन जब पुजना था तो सबसे बड़ी बहू अपने पति से बोली कि आज हम लोग पूजा करेंगी।

हम लोगों ने पास आटा गुड़ आदि नहीं है हो सके तो इस घर की मालकिन से मांगकर देखो। वह गया तो उसने अपनी पत्नि के बताये अनुसार उससे आटा घी आदि मांगा । तब

सिठानी बोली कि तुम लोग कहां से आए हो तथा तुम्हारी यह हालत कैसे हुई तो उसने सब बताया कि हमारी एक मां थी वह पूजा पाठ आदि किया करती थी हमारी पत्नियों ने उन्हें दान धर्म न करने दिया सो वे एक दिन बाहर निकल गये और बस उसी दिन से हमारे घर में गरीबी आती चली गयी और आज ऐसी हालत हो गयी। तब यह कहानी सुनकर सिठानी अपने लड़के को पहचान गयी तथा उससे बोली कि अपने सभी भाइयों तथा सभी बहुओं को लेकर मेरे पास आओ जब वे सब फटेहाल उसके पास आईं तो वह बोली कि मैं ही तुम्हारी मां हूं और मैं ही तुम्हारी सास हूं। तब सभी बहुयें उसके पैरों में गिर पड़ी और क्षमा मांगने लगी। सेठानी ने उन्हें नहलवा धुलवा कर अच्छे कपड़े पहनने को दिये और विधिवत पूजा पाठ करवाया और उनसे कह दिया कि जाओ अपने घर वापस जाओ। वहां तुम्हारा सब कुछ पहले जैसा ही होगा तथा अब से कभी दान- दक्षिणा के लिये इन्कार न करना। वे जब अपने घर पहुंची तो सब कुछ जैसा का तैसा ही था। तब से वे बहुएं हमेशा दशारानी के गाड़ा लेने लगीं और खुद भी दान- दक्षिणा करने लगीं। फिर कभी उनके पास धन तथा किसी चीज की कमी नहीं आयी।

5- सोने के फरागुलेला

एक ग्वालिन थी उसका लड़का और पति दोनों परदेश गये थे। उसकी एक बहू थी वह दूध दही बेचा करती और ग्वालिन गाय भैंस चराया करती थी।

एक दिन जब बहू दूध बेंचने जा रही थी तब उसे एक घर में कुछ औरतें आपस में किस्सा कहते हुये दिखीं। उसने भी बैठकर किस्सा सुना तथा बाद में पूछा कि किसके किस्से हैं और इसका क्या फल है। तो वे बोलीं यह दशारानी का किस्सा है इसे कहने से परदेशी परदेश से सकुशल लौट आते हैं। सुख सम्पत्ति घर में आती है और सब कष्ट खत्म हो जाते हैं। यह सुनकर बहू का मन भी हुआ कि वह भी दशारानी के गाड़ा ले ले। लेकिन वह कहने लगी कि मेरी सास बहुत खराब है, वह सुनेगी तो बहुत गुस्सा होगी। तो वे औरतें बोलीं। कि तुम दशारानी के गाड़ा ले लो और अपनी सास को मत बताना। रोज यहीं किस्सा सुन जाया करो और दसवें दिन पूजा कर लेना। उनके कहने पर बहू ने भी दशारानी के गाड़ा ले लिये। और रोज उनसे किस्सा सुनने लगी। सास को कोई सन्देह नहीं हुआ क्योंकि वह सोचती थी कि ये दूध दही बेचने जाती है। इस तरह नौ दिन बीत गये दसवें दिन पूजना था। तो जब उसकी सास बाहर चली गयी तब उसने जल्दी- जल्दी नहाया धोया और पानी के पन फरागुलेला बनाये और पूजा करके जैसे ही उसने थाली में उन्हें परोसा और खाने के लिये बैठी तो उसकी सास आ गयी उसके साथ एक औरत मट्ठा लेने वाली भी आई थी। इधर बहू बहुत डर गयी उसने दरबाजा खोलने से पहले सब फरागुलेला जल्दी- जल्दी उसी मट्ठे की मटकी में उड़ेल दिये और जाकर दरवाजा खोल दिया। सास अन्दर आई और मट्ठा देने के लिये मट्ठे की मटकी के पास पहुंच गयी।

तब बहू एक दम घबरा कर बोली कि मट्ठा मैं दिये देती हूं तो सास मना करते हुये

बोली कि मट्ठा मैं दे दूंगी तुम जाकर कोई और काम देखो। जब सास ने मट्ठा निकालने को किया तो अंदर पानी के फरागुलेला बजने लगे उसने देखा कि उसके अन्दर तो सोना है। तो उसने मट्ठे वाली से कह दिया कि तुम जाओ आज का मठा खराब हो गया है। जब वह चली गयी तो ग्वालिन ने अपनी बहू को डांटते हुये पूछा कि बताओ तुम ये सोना कहां से लाई हो किसके यहां चोरी की है बहू को भी अचम्भा हुआ कि उसमें तो सब पानी के फरागुलेला डाले थे ये सोने के कैसे हो गये। तो उसने अपनी सास से कह दिया कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम तब सास बहुत अधिक गुस्से में आ गयी और बोली, चलो आज तुम्हारा न्याय करवा के रहूंगी और वह उसे पंचों के यहां ले जाने लगी। रास्ते में उससे एक सेठ ने पूंछा कि कहां जा रही हो तो ग्वालिन बोली कि मेरी बहू पता नहीं किसके यहां से ये सोना चुरा लाई है उसी का न्याय करवाने जा रही हूं। सेठ ने उसे बुलाया और बोला कि क्यों पंचों के चक्कर में पड़ती हो क्यों न हम इसे आधा- आधा बांट लें। मैं यह बात किसी को न बताऊंगा। तो ग्वालिन मान गयी। सेठ ने अपना तराजू निकाला और उन्हें आधा - आधा तौलने लगा। तो जो सेठ का पलड़ा था वे पानी के फरागुलेला हो गये और जो ग्वालिन ले तो सोने के हो जायें सेठ ने कई बार उन्हें पलट- पलट कर तौलने की बहुत कोशिश की लेकिन हर बार वैसा ही हुआ तो सेठ ने हार मान कर सब फरागुलेला ग्वालिन को दे दिये और बोला ये तुम्हारे हैं शायद तुम्हारी बहू कुछ जादू टोना जानती है। उसके इतना कहने पर ग्वालिन अपनी बहू से बोली कि बता तू क्या जादू कर रही है सच- सच बता। तब बहू बोली कि मैं कुछ नहीं जानती जो जाने दशारानी जाने। तो सास बोली कि ये दशारानी कौन है मुझे पूरी बात बताओ। तब बहू ने अपनी सास को बिना डर भय के सब बात बता दी। सास बहुत खुश हुई उसने घर जाकर बहू से पूजा करवाई और पानी के फरागुलेला बना कर खिलाये। उसका पति और लड़का दोनों परदेश से अच्छी तरह से लौट आये। तब सास बहू दोनों मिलकर दशारानी के गाड़ा लेने लगी। जै हो दशारानी महारानी जैसे उनके दिन बहुरे वैसे सबके बहुरे।

6- बड़ी रानी

एक राजा था उसके दो रानियां थी। वह अपनी छोटी रानी को अधिक चाहता था इसलिये वह घर का कोई काम नहीं करती थी तथा बड़ी रानी से ही सब काम करवाती थी। तथा नौकरानी की तरह उसे खाना भी देती थी। छोटी रानी घर में रहती थी तथा बड़ी रानी बाहर का काम करती थी और वह रोज खेत जाया करती थी, गाय, भैस चराया करती थी। और दिन डूबने पर ही घर लौटकर आती थी।

एक दिन जब बड़ी रानी गाय, भैंस चराने के लिये गई तो उसे खेत में कुछ चिड़ियां कहानी किस्से कहते हुये दिखीं। तो रानी ने उनसे पूछा कि ये तुम लोग क्या कह रही हो इससे क्या होता है। तो चिड़ियां कहने लगीं कि ये किस्सा दशारानी का है। इनकी पूजा दसवें दिन होती है नौ दिन इनके माहात्मय के किस्से कहे जाते हैं।

इनकी पूजा करने से घर की बिगड़ी दशा सुधर जाती है और अच्छे दिन लौट आते

हैं। तब रानी की भी दशारानी के गाड़ा लेने की इच्छा हुई तो उन चिड़ियों से कहा कि यदि मैं भी ले लूंगी तो कैसे पूजा करूंगी किससे कहानी कहूंगी छोटी रानी तो बहुत खराब है वह देख लेगी तो मुझे घर से निकाल देगी। उसकी व्यथा सुन वे चिड़ियां बोली कि तुम ये गाड़ा ले लो और रोज हमारे पास आकर किस्से सुन जाया करो और दसवें दिन बिना किसी से बताये पूजा कर लेना। रानी ने गांड़ा ले लिया।

रानी रोज एक किस्सा सुनती और घर का सारा काम भी सम्हालती थी। दसवें दिन जब पूजा थी तो उस दिन भी रानी ने पूरे घर की झारा बटोरी की और साफ किया। सफाई करने में उसे एक छोटी सी डेली गुड़ मिला और थोड़ा सा कना (चावल की नीचे की कनकी) मिला उसने जाकर छोटी रानी को दिया तो छोटी रानी ने कहा इसे मैं क्या करूंगी इसे अपने पास रखो। बड़ी रानी उसे अच्छी तरह रखकर अपने रोज के काम में चली गयी।

जब वह लौटकर आई तो देखा कि वह कना जो वह रख गई थी वह एक शेर गेहूं का आटा हो गया है और वह गुड़ एक बटी हो गया। रानी ने खुश होकर नहाया धोया पानी के फरागुलेला बनाये और पूजा की।

दूसरे दिन छोटी रानी राजा से बोली कि आपकी बड़ी रानी फटी धोती पहनती है। तब लोग हमको ही थूकते होंगे इसके लिये एक छींट झमरा ले आइये और हमारे लिये 'लहर पटोर'। राजा रानी की बात मान गये और अपनी दोनों रानियों को धोती खरीदने के लिये अपने साथ ले गये। जब दुकानदार बड़ी रानी को छीट झमरा देता था तो वह लहर पटोर हो जाता था और छोटी रानी को जब वह लहर पटोर देता था तो वह उसके लेते ही छींट छमरा हो जाता था इस प्रकार दुकानदार ने कई बार उलट पलट कर दिया लेकिन हर बार वैसा ही हुआ। दुकानदार हार मान कर बोला कि मैं तो छींट झमरा ही देता हूं लेकिन यह लहर पटोर हो जाता है तो मैं क्या करूं मुझे छीट छमरा के ही पैसा दे दो। राजा पैसे देकर दोनों रानियों को लेकर घर आ गये।

घर आते ही छोटी रानी ने बड़ी रानी से पूछा कि बताओ तुम ने क्या किया है नहीं तो मैं राजा से कह दूंगी। तो वह डरते हुये बोली कि मैं कुछ नहीं जानती जाने सा चिड़ियां जाने और दशारानी महारानी जाने। तो वह बोली कि कहां हैं ये तुम्हारी चिड़ियां। तो बड़ी रानी ने कहाकि खेत में।

दूसरे दिन वह छोटी रानी खेत गई। घर से उन चिड़ियों के पकड़ने के लिये एक बड़ा सा डंडा भी ले गयी। खेत में उसे भी चिड़ियां दिखीं। छोटी रानी का इतना बड़ा डंडा देखकर चिड़ियां उड़ गईं वे उसके पास नहीं आई। तो वह चिल्ला कर बोली कि बताओ तुमने बड़ी रानी को क्या पट्टी पढ़ाई है और ये दशारानी कौन है जल्दी बताओ नहीं तो इसे डंडे से तुम सबको मार डालूंगी। चिडियों ने आपस में सलाह करके उसे दंड देने की योजना बनाई। एक चिड़िया बोली कि पहले तुम अपना डंडा रख दो फिर हम बतायेंगे। उसने डंडा जमीन पर रख दिया बोली अब बताओ तो चिड़ियां बोली कि रोज घर का सब कामकाज निपटाकर यहां आया करो तो हम तुम्हें एक किस्सा सुनाया करेंगी। रानी बोली,

ठीक है। अब अगले दिन से छोटी रानी ने घर का सब काम काज शुरु कर दिया और खेत गाय चराने ले जाने लगी लेकिन उसके मन से ईर्ष्या की भावना नहीं गई वह बड़ी रानी की ही नकल करती थी। रोज एक किस्सा सुनकर घर आ जाती। दसवें दिन पूजा करवाने के लिये चिड़ियों ने कहा कि मिट्टी के फरागुलेला बना लेना और पूजा करने के बाद खा लेना उसने मिट्टी के फरागुलेला बनाये पूजा की और मन ही मन बडी रानी पर हंसती हुई सोचने लगी कि मेरे साथ भी दशारानी अच्छा करेगी और बड़ी रानी को चिढ़ाते हुये जहां उसने एक मिट्टी का फरागुलेला खाया तो उसके गले में फंस गया और वह वहीं मर गयी । बड़ी रानी के अच्छे दिन लौट आये राजा उसे खूब चाहने लगे। तब से वह हमेशा दशारानी का गाड़ा लेने लगी।

7- आंस काटौं कांस काटौं

एक बुढ़िया थी उसके कोई नहीं था। वह रोज एक पर्वत पहाड़ पर जाया करती थी और हमेशा दशारानी के गाड़ा लिया करती थी वह पहाड़ में रोज जाकर इस प्रकार कहती थी- 'आंस काटौं, कांस काटौं" पर्वत पहाड़ पर पूरा बांधौ दशारानी मुझे कुछ आड़ दो।' उसकी इस प्रकार की श्रद्धा देखकर दशारानी ने प्रसन्न होकर उसे एक लड़का दिया। तब भी वह रोज जाती थी और कहती थी कि महारानी अब मेरा लड़का अच्छी तरह से पढ़ लिखकर बड़ा हो जाये। उसके नाती पोते भी हो गये। अब बुढ़िया ने पहाड़ जाना बन्द कर दिया तथा अपने लड़के, बहू, नाती- पोते में सब कुछ भूल गई तथा दशारानी के गाड़ा लेना भी भूल गयी।

एक दिन दशारानी एक बुढ़िया का भेष रख कर उसके घर गई और उससे भिक्षा मांगने लगी जब वह बुढ़िया भिक्षा देने लगी तो दशारानी उससे कहने लगी कि अब तुमने पहाड़ पर भी आना बंद कर दिया है और नाती पोते में सब पूजा पाठ भी बन्द कर दिया है। तो वह बुढ़िया तुरन्त उन्हें पहचान गई और उनके पैरों में गिर पड़ी और क्षमा मांगने लगी तथा दूसरे रोज से वह फिर पहाड़ पर जाने लगी और दशारानी के गाड़ा लेना फिर से शुरु कर दिया।

8- देवरानी- जेठानी

एक देवरानी जेठानी थीं दोनों हमेशा दशारानी के गाड़ा लिया करती थीं और खूब पूजा पाठ किया करती थीं उनके कोई लड़के नहीं थे तो उन्होंने दशारानी से अपने लिये लड़कों की कामना की और कहा महारानी हमें एक- एक लड़का दो तो हम दशरइयां खिलायेंगी। एक वर्ष बीता। दोनों के एक-एक लड़के हुये। देवरानी ने तो दशरइयां खिला दीं लेकिन जेठानी ने यह कहकर टाल दिया कि जब इसकी पशनी हो जायेगी तब खिलाऊंगी। उसके लड़के की पशनी हो गयी अब उसने कहा कि मेरे लड़के का जब मुंडन होगा तब दशरइयां खिला दूंगी। धीरे- धीरे दिन बीते उसके लड़के का मुण्डन भी हो गया फिर उसने यह कहकर टाल दिया कि जब इसका कन्छेदन हो जायेगा तब खिला दूंगी। उसका कन्छेदन भी हुआ फिर से वह टाल गई और कहने लगी कि अब इसके

ब्याह में ही खिला दूंगी। धीरे- धीरे कई वर्ष बीते। लड़का बड़ा हो गया। उसका ब्याह भी होने लगा। लेकिन ब्याह अभी आधा ही हो पाया था कि अचानक जोर की आंधी आई और वह दूल्हा को उड़ा ले गयी। सब लोग पकड़ो- पकड़ो कहते हुये रह गये, लेकिन लड़का उसी आंधी में गायब हो गया। लड़की वाले अपनी लड़की लेकर घर आ गये। जेठानी बहुत परेशान हुई सब जगह अपने लडके को ढुढ़वाया। लेकिन वह नहीं मिला। उसकी देवरानी के लड़के की शादी भी हुई पर उसके ब्याह में ऐसी कोई अड़चन नहीं आई। जेठानी दशरइयां खिलाना पूरी तरह से भूल गयी थी।

इधर लड़की (जिसका आधा ब्याह हुआ था) उसके घर रोज एक साधु भिक्षा लेने के लिये आया करता था जब उसके घर के लोग भिक्षा दे तो साधु आशीर्वाद देता था पर जब वह लड़की भिक्षा देने आती थी तो वह साधु कहता था कि अध ब्याही की जय हो। रोज ऐसा ही वह कहता था एक दिन वह लड़की परेशान होकर अपनी मां से बोली कि ये बाबा मुझे रोज ऐसा कहता है क्यों कहता है? तो एक दिन जब वह बाबा आया तो वही लड़की भिक्षा देने निकली। पीछे- पीछे उसकी मां भी साथ में आई। उस बाबा ने फिर कहा कि अधब्याही की जय हो। तो तुरन्त उसकी मां ने कहा कि एक तो इस बेचारी का आधा ब्याह हुआ है इसका दूल्हा आधे ब्याह से ही आधी में उड़ गया और ऊपर से तुम ऐसा कहते हो। तुम ऐसा मत कहा करो मेरी लड़की को बहुत दुख होता है। बाबा ने कहाकि एक लड़के को मैंने देखा है जो सिर पर मौर लगाये है । जामा पहने हुये है। तो उसने कहा कि कहां देखा है तो बाबा बोला कि इधर थोड़ा गांव नाककर एक कुआं है उसी के पास शायद वह जमीन के अंदर रहता है रात को बाहर आ जाता है और दिन होते ही वह अंदर घुस जाता है। क्या पता वह तुम्हारी बेटी का दूल्हा ही हो तो मां ने कहाकि हमें भी उस स्थान में ले चलो देखें वही है कि नहीं। दूसरे दिन रात को वो मां - बेटी दोनो बाबा के साथ गई उन्होंने दूर से देखा तो वह बैठा हुआ था और पास जाकर देखा तो पहचान गई। ये वही लड़का था। जब धीरे- धीरे दिन होने लगा तो वह लड़का अंदर जाने को हुआ तो वह लड़की दौड़कर आई और दूल्हे के पांव में गिर पडी उसने पैर पकड़ लिये और रोने लगी कहने लगी अब आप मत जाइये और जाना ही है तो मुझे भी अपने साथ ले जाइये यहां मुझे किसके सहारे छोड़ कर जा रहे हैं। तो बोला कि ठीक है तुम जाओ और अपने ससुराल में जाकर रहो। मैं रोज रात को तुम्हारे पास आया करूंगा। तो वह बोली कि ठीक है। इतना कहकर वह अपनी मां के पास आई और बोली की मुझे मेरी ससुराल छोड़ आओ। अगले दिन उस लड़की के मां बाप उसे ससुराल छोड़ आये। तो लड़की दिन भर काम करती और रात को उसका दूल्हा आ जाता था तो उससे बातें करती थी। कुछ दिन बीते तो उसके घर में सब लोग पूंछने लगे कि तुम रात में किससे बातें करती हो तो वह चुप रही और कह दिया कि किसी से नहीं। कुछ दिन बाद वह गर्भवती हो गयी तो सब जगह उसके लिये कानाफूसी होने लगी। उसके एक लड़का हुआ।

तो उसने सबसे बता दिया कि मेरा पति रोज रात को मेरे पास आता है और दिन होने से पहले ही चला जाता है। एक दिन उस लड़के की बारहवें दिन की पूजा थी। उस दिन उसके दूल्हा ने उसे सिखा दिया कि तुम धीरे से लड़के को काट लेना और जब लड़का रोने लगे तो नाउन से धीरे से कह देना कि लड़का इसलिये रो रहा है कि क्योंकि वह गांठ जोड़ने के लिये बाप बुलाना चाहता है। तो उसने वैसा ही किया जब उसकी पूजा होने लगी तो सभी देवी देवता आये दशारानी भी उस लड़के को (उसी दूल्हे को) लेकर आई। अपने दूल्हे के सिखाये अनुसार उसने लड़के को रूला दिया। तो सब लोगों ने नाउन से पूछा कि बच्चा क्यों रो रहाहै तो नाउन बोली कि यह गांठ जोडने के लिये अपना बाप चाहता है। यह सुनकर वहां बैठी दशारानी ने उस लड़के को वहां बिठा दिया पूरी पूजा हुई। पूजा की समाप्ति पर जिठानी ने सब देवी देवताओं के पैर पड़े। जब उन्होंने दशारानी के पैर पड़े तो उन्होंने आशीर्वाद दिया और कहा 'हयाती पूती जलम जूड़ी' और उसके लड़के को लेकर जाने लगी। तो जेठानी ने उनके पैर पकड़ लिये कि महारानी अभी तो आपने कहा कि 'हयाती पूती जलम जूडी' और अब मेरा लड़का लेकर जा रही हैं। तब दशारानी बोली कि तुमने दशरइयां खिलाने के लिये कहा था तो वो तुम अभी तक टालती आ रही हो तो ये लड़का मैं तुम्हें कैसे दे दूं। और रही मेरे आशीर्वाद की बात, तो वह भी ठीक ही है मेरी कृपा से तुम्हारे लड़के के सभी संस्कार बिना किसी अड़चन के निपट गये और एक नाती भी हो गया। अब इस लड़के का क्या काम। इसे मैं लिये जा रही हूं।

उनकी बात सुनकर अचानक जेठानी को याद आया कि उसने दशारानी का उद्यापन करने के लिये दशरइयां खिलाने के लिये कहा था जो अभी तक नहीं खिलाया। वह दशारानी के पैर पकड़कर रोने लगी और कहने लगी कि मैं भूल गयी थी मैं अभी दशरइयां खिलाऊंगी। मेरे लड़के को छोड़ दो। और अब से मैं कभी नहीं भूलूंगी। उसने दशरइयां खिलाई। दशारानी ने उसे माफ कर दिया और उसके लड़के को छोड़ दिया। और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगीं। तब से उसकी बहू भी दशारानी के गाड़ा लेने लगी।

9- पंडित- पंडिताइन

एक पंडित पंडिताइन थे। वे बहुत गरीब थे। पंडित दिन भर दूसरों के यहां जाकर पूजा पाठ करता था और जो भी थोड़ा दक्षिणा में मिल जाता उसी से अपना और पंडिताइन का पेट पालता था और पंडिताइन दिन भर आटा पीसती थी और परइया (मिट्टी का छोटा सा बर्तन) में उठाती थी।

पंडिताइन गर्भवती थी इसलिये वह अत्यधिक परेशान थी कि अभी तो किसी तरह हम दोनों अपना पेट पाल लेते हैं परन्तु इस बच्चे को इस गरीबी के हालत मैं हम कैसे पाल पायेंगे। धीरे- धीरे नौ महीने बीते। जब पंडिताइन के पेट में दर्द हुआ तो वह घर से बाहर चली गयी। उसने एक लड़की को जन्म दिया। पंडिताइन उसे घूरे (कचरे का ढेर) में ही छोड़कर घर आ गयी। इतने में एक कुम्हार वहीं से गुजरा। उसे किसी बच्चे की रोने की आवाज सुनाई पड़ी।

वह उसी घूर में गया देखा तो एक लड़की, जिसका नया- नया जन्म हुआ था रो रही थी। कुम्हार के कोई सन्तान नहीं थी उसने उस लड़की को अपने घर ले जाने की सोची लेकिन एक बार उसने पूरे गांव में मुनादी करवा दी कि जिसकी भी लड़की हो आकर ले जाये। लेकिन जब कोई नहीं आया तो उस लड़की को अपने घर ले गया।

वह लड़की धीरे- धीरे तेरह चौदह वर्ष की हो गयी। उस कुम्हार ने उस लड़की के लिये, एक मिट्टी का घोडा बना दिया वह उस घोड़े को लेकर एक तालाब में गई और पानी पिलाते हुये कहने लगी 'माटी का घोड़ा माटी की लगाम घोड़ा पानी पी ले' वहीं थोडी दूर पर एक राजकुमार भी अपने घोड़े को पानी पिला रहा था वह एक काठ (लकड़ी) का घोड़ा लिये था उसने भी अपने घोड़े को पानी पिलाते हुये कहा 'काठ का घोड़ा लोहे की लगाम घोड़ा पानी पी ले' तो झट से वह लड़की बोली कि कहीं काठ का घोड़ा भी पानी पीता है मूर्ख कहीं की। तो वह राजकुमार उस लड़की की चंचलता पर मन ही मन आकर्षित हो गया और उसकी बात का जबाव देते हुये बोला कि जब काठ का घोड़ा पानी नहीं पी सकता तो भला मिट्टी का घोड़ा पानी कैसे पी सकता है।

वह राजकुमार अपने घर जाकर बैठ गया न किसी से बोला और न ही किसी से बात की तो रानी उसके पास गई और उसकी उदासी का कारण पूछा तो राजकुमार ने बताया कि मैं तो उस कुम्हार की लड़की से ही ब्याह करूंगा। और यदि नहीं हुआ तो मैं खाना पीना सब छोड़ दूंगा। रानी ने ये बात जाकर राजा को बताई तो राजा बहुत परेशान हुआ और राजकुमार को बहुत समझाया कि बेटा तुम एक राजा के लड़के हो तुम्हारा ब्याह एक राजकुमारी से ही होगा। और फिर एक कुम्हार की लड़की से तुम्हारा ब्याह होते देखकर बिरादरी में हमारी नाक कट जायेगी। परन्तु राजकुमार किसी भी तरह नहीं माना। अपने बेटे की खुशी के लिये वह उस कुम्हार के घर रिश्ता पक्का करने गया तो कुम्हार भी बहुत परेशान हुआ उसने राजा के सामने तो हां कर दी पर उसने कुम्हारिन (कुम्हार की पत्नी) से बात की और उसे अपने गांव से दूर छोड़ आने का फैसला किया। जब रात हुई तो कुम्हारिन ने उस लड़की के लिये एक चुकरी (मिट्टी का छोटा घड़ा) में खाना रख दिया और चुकरी में पीने के लिये पानी भर दिया और दोनों ने उसे कंडा बीनने के बहाने गांव से बहुत दूर ले जाकर बिठा दिया। उससे कह दिया कि तुम यहीं बैठो हम कंडा बीनकर आते हैं। और घर चले आए। जब बहुत देर हो गयी तो वह सब जगह अपने मां बाप को ढूंढ़ने लगी और रोने लगी। बहुत देर तक उसे रोता हुआ देखकर तुलसारानी और दशारानी दोनों प्रकट हुई और उस लड़की से पूंछा कि क्यों रो रही हो, वह बोली कि मेरे मां- बाप कंडा बीनने के लिये गये हुये थे अभी तक लौटकर नहीं आए अब मैं क्या करूं। उसकी दशा देखकर दशारानी बोली कि तुम चिन्ता मत करो, हम तुम्हारी मौसी हैं हम तुम्हारे लिये एक घर बनाये देते हैं तुम उस घर की सफाई किया करो लीपा पोती करके जो लीझी (लीपने केबाद जो गोबर बचता है) बचे उसे एक चुकरी में भरती जाना और जो पानी बचे उसको दूसरी चुकरी में भरती जाना। और अब रोना- गाना नहीं। जब भी कोई कष्ट हो तो हमें बुला लेना। हम यहीं पास में रहते हैं।

उन्होंने उस लड़की के लिये एक घर बना दिया और छोटी सी माया की नगरी बसा दी और चली गयी। इसके बाद उस लड़की ने खाया पिया और अपने घर में सो गई और रोज वह घर को लीप- पोतकर जो बचता था उसे चुकरियों में भरती जाती थी।

एक दिन दशारानी ने तुलसारानी से कहा कि अब हमें इस लड़की का ब्याह कर देना चाहिए जिससे ये अपने घर जाये और हमारी भी जिम्मेदारी खत्म हो जाये। तो तुलसारनी ने कहा कि तुम ठीक कह रही हो चलो इसके लिये अच्छा सा लडका ढूंढ़ दें। वो दोनों गई और उसी लड़के को ढूंढ़ आई जो राजा का लड़का था और इसी लड़की से शादी करना चाहता था। लेकिन लड़के को इस बात का पता नहीं था। कुछ दिन बाद उसकी शादी होने लगी। बारात आई और लड़की विदा हुई। बारात थोडी दूर तक ही जा पाई थी कि कुछ बाराती बोले कि हम अपना डंडा भूल आए हैं एक बोला कि मैं अपने जूते छोड आया हूं। तो वे लोग अपनी-अपनी वस्तुएं लेने के लिये वापस लौट पड़े। लेकिन उन्हें कहीं वो जगह दिखाई नहीं दी उनकी चीजें वहीं जंगल में पड़ी हुई थी। वे लोग बहुत भयभीत हुए कि ये सब कहां गई अभी अभी तो बाराद विदा हुई है और अब सब गायब। उन व्यक्तियों ने सबको जाकर बताया कि ये पता नहीं कैसी लड़की है शायद ये कोई भूतप्रेत है इसे यहीं उतार दो उन्होंने वह सब भी मां बाप को बताया जो वहां देखा था। क्रुद्ध होकर राजा ने कहा चलो बेटे, इसे वहीं छोड दो लेकिन लडके ने उस लड़की को देख लिया था उसने फिर राजा से जिद की तो राजा बोले कि ठीक है तुम्हें मेरी बात नहीं मानना है तो तुम भी यहीं पड़े रहो और सब आदमियों को लेकर अपने महल वापस आ गया।

इधर उस लड़की ने अपनी चुकरियों में से जो गोबर की लीझी और पानी भरा था वह सब सोना चांदी हो गया था उस राजकुमार ने उस सोना चांदी से अपने लिये एक घर बनवाया। खाना कपड़ा खरीदकर सुखपूर्वक रहने लगे और जो सोना बचा उससे कोई व्यवसाय करने लगा। वह लड़की दशारानी के गाड़े लिया करती थी और हमेशा पूजा पाठ करती थी। इधर रानी (राजकुमार की मां) अपने लड़के के बिछोह में रो-रो कर पागल हो गयी थी। धीरे-धीरे उसकी आंखों की रोशनी भी चली गयी। एक दिन उस लड़की ने अपने पति से कहा कि चलो तुम्हारी मां से मिल आएं। मैंने तो उन्हें देखा भी नहीं। राजकुमार ने समझाया कि वहा जाने से से कोई फायदा नहीं है। लेकिन वो नहीं मानी। आखिर राजकुमार उसे लेकर अपनी मां के पास गया और बोला मां देखो तुम्हारा बेटा आया है तो वह एकदम रोने लगी और बच्चे को खूब प्यार किया बहू ने पैर छुये तो मां ने खूब आशीर्वाद दिया। दशारानी की कृपा से उसकी आंखे भी ठीक हो गयीं। राजा का इस बीच देहान्त हो चुका था। राजकुमार अपनी मां को लेकर घर आ गया। सास- बहू दोनों दशारानी और तुलसारानी की पूजा करने लगीं और सुख चैन से रहने लगीं।

वा. क. अ. = वाणिज्यिक कर अधिकारी

परिचय (वंशवृक्ष)

फूलकली (पतिपक्ष) व अभिलाषा (पतिपक्ष)

कालीचरण मिश्र (कान्यकुब्ज ब्राम्हण, कात्यायन गोत्र सोठियायें के मिश्र) बड़ी मनोह कानपुर

बन्दीदीन मिश्र

रामविशाल (सन्यासी हुये)

रामगोपाल
पत्नी - फूलकली देवी पहरा जि. महोबा

सावित्री
बालगोविन्द तिवारी
गजफ्फरपुर जि. वाराबंकी

अशोक तिवारी
(सिवनी में बसे)

शशांक तिवारी

हरिहर दत्त (से.नि. वा. क. अ.)
पत्नी अभिलाषा
सतना

गायत्री
दुर्गा प्रसाद शुक्ल
घाटमपुर

सुमन अनिल पूनम
राजेश मिश्रा
श्वेता स्वाती

ब्रम्हदत्त
माया
पहरा

दुर्गा डाली रवि रिंकी नारायण शिवा
लक्ष्मी (वन्दना) (रूपाली)

अनीता
नवीन अवस्थी
जबलपुर (कटनी)
श्रवण आध्यात्म

मन्ना (मनीषा)
संदीप तिवारी
सतना
सोमिल सुनेहा

रीता
विकास अवस्थी
जबलपुर (रीठी)
विक्रमादित्य सुरभि

सुनीलदत्त
सतना
शुभदत्त आनंद दत्त

रीना
प्रवीण दुबे सागर
पुष्कर दुबे

फूलकली (पिता पक्ष)

स्वर्गवास 3-11-11 / 2011

रामचरन पाण्डे
कान्यकुब्ज ब्रा. भरद्वाज गोत्र
महुवा जि. बांदा

गुज्जर
दामोदर फतेहपुर
रज्जन तिवारी
हरीशंकर तिवारी

रामगोपाल
राजा (महुवा)
रामभरोसे (निंदवारी)

फूलकली
पति- रामगोपाल मिश्र
पहरा (महोबा)

रामसेवक
पं. किशोरी
बांदा

मुन्नी नया खेड़ा
(रायबरेली)
रामशंकर मिश्र

ममता
उमेशचन्द्र
अवस्थी
बांदा
वीणा गुड्डू

वंदना
सुभाष
द्विवदी
खजुहा
मीतू ऋषि

आराधना
राधाकान्त
पाण्डे
लखनऊ
दीपू शिल्पा लड़की

आलोक
रश्मि
बांदा

पंकज
वंदना
बांदा

मृदुल
माधुरी
बांदा

लोकेश

साधना

अभिलाषा (पिता पक्ष)

रामचरन त्रिवेदी (अतर्रा) का. ब्रा. भरद्वाज गोत्र

रंची
शम्भू वाजपेयी
राम बाबू, श्याम बाबू, गनेश

पन्नालाल
किशोरी

झांसी
रानी चन्द्रभान पद्मा
विद्याभूषण क्रिम

विजय
हनुमान राजू विश्वनाथ

शकुन्तला (फूला) (अभिलाषा)
हरिहरदत्त, सतना
अनीता, मन्ना, रीता, सुनील, रीना

ललित
किशोर
सरिता
विवेकानंद, रामानंद, जनकदुलारी, ज्योती, दीपक

सुदामा
उर्मिला
अतर्रा
सुशील, अनिल, रोशनी, संतोष

रामकृष्ण
अंतिमा
अतर्रा
शालू, पुत्री, पुत्री

उर्मिला
परशुराम मिश्रा
भदुरी
नीलू, शीलू, संध्या, अतुल

कमला (चुनियां)
विनोद तिवारी
अतर्रा
बिन्दू, इन्दू, रामू

गोमती
सुरेश मिश्रा
अयोध्या

वा. क. अ. = वाणिज्यिक कर अधिकारी

परिचय (वंशवृक्ष)

फूलकली (पतिपक्ष) व अभिलाषा (पतिपक्ष)

कालीचरण मिश्र (कान्यकुब्ज ब्राम्हण, कात्यायन गोत्र सोठियायें के मिश्र) बड़ी मनोह कानपुर

- बन्दीदीन मिश्र
  - रामविशाल (सन्यासी हुये)
  - रामगोपाल — पत्नी - फूलकली देवी पहरा जि. महोबा
    - सावित्री — बालगोविन्द तिवारी, गजफ्फरपुर जि. बाराबंकी
      - अशोक तिवारी (सिवनी में बसे)
        - शशांक तिवारी
    - हरिहर दत्त — पत्नी अभिलाषा, सतना
      - अनीता — नवीन अवस्थी, जबलपुर (कटनी)
        - श्रवण, आध्यात्म
      - मन्ना (मनीषा) — संदीप तिवारी, सतना
        - सोमिल, सुनेहा
      - रीता — विकास अवस्थी, जबलपुर (रीठी)
        - विक्रमादित्य, सुरभि
      - सुनीलदत्त, सतना
      - रीना
    - गायत्री — दुर्गा प्रसाद शुक्ल, घाटमपुर
      - सुमन, अनिल, पूनम
      - राजेश मिश्रा
        - श्वेता, स्वाती
    - ब्रम्हदत्त — माया, पहरा
      - दुर्गा, डाली, रवि, रिंकी, नारायण, शिवा
      - लक्ष्मी (वन्दना) (रूपाली)

फूलकली (पिता पक्ष)

रामचरन पाण्डे — कान्यकुब्ज ब्रा. भरद्वाज गोत्र, महुवा जि. बांदा

- गुज्जर — दामोदर फतेहपुर
  - रज्जन तिवारी
  - हरीशंकर तिवारी
- रामगोपाल
  - राजा (महुवा)
  - रामभरोसे (तिंदवारी)
- फूलकली — पति- रामगोपाल मिश्र, पहरा (महोबा)
- रामसेवक — पं. किशोरी, बांदा
  - ममता — उमेशचन्द्र अवस्थी, बांदा
    - वीणा, गुड्डू
  - वंदना — सुभाष द्विवदी, खजुहा
    - मीतू, ऋषि
  - आराधना — राधाकान्त पाण्डे, लखनऊ
    - दीपू, शिल्पा, लड़की
  - आलोक — रश्मि, बांदा
  - पंकज — वंदना, बांदा
  - मृदुल — माधुरी, बांदा
  - लोकेश
  - साधना
- मुन्नी नया खेड़ा (रायबरेली)
  - रामशंकर मिश्र

अभिलाषा (पिता पक्ष)

रामचरन त्रिवेदी (अतर्रा) — का. ब्रा. भरद्वाज गोत्र

- रंची — शम्भू वाजपेयी
  - राम बाबू, श्याम बाबू, गनेश
- पन्नालाल — किशोरी
  - शकुन्तला (फूला) (अभिलाषा) — हरिहरदत्त, सतना
    - अनीता, मन्ना, रीता, सुनील, रीना
  - ललित — किशोर, सरिता
    - विवेकानंद, रामानंद, जनकदुलारी, ज्योती, दीपक
  - सुदामा — उर्मिला, अतर्रा
    - सुशील, अनिल, रोशनी, संतोष
  - रामकृष्ण — अंतिमा, अतर्रा
    - शालू, पुत्री, पुत्री
  - उर्मिला — परशुराम मिश्रा, भटुरी
    - नीलू, शीलू, संध्या, अतुल
  - कमला (चुनियां) — विनोद तिवारी, अतर्रा
    - बिन्दू, इन्दू, रामू
  - गोमती — सुरेश मिश्रा, अयोध्या
- झांसी
  - रानी, चन्द्रभान, पद्मा
    - विद्याभूषण, किंम
- विजय
  - हनुमान, राजू, विश्वनाथ

वा॰ क॰ अ॰ = वाणिज्यिक कर अधिकारी

परिचय (वंशवृक्ष)

फूलकली (पतिपक्ष) व अभिलाषा (पतिपक्ष)

कालीचरण मिश्र (कान्यकुब्ज ब्राम्हण, कात्यायन गोत्र सोठियायें के मिश्र) बड़ी मनोह कानपुर

- बन्दीदीन मिश्र
  - रामविशाल (सन्यासी हुये)
  - रामगोपाल, पत्नी - फूलकली देवी पहरा जि. महोबा
    - सावित्री — बालगोविन्द तिवारी, गजफ्फरपुर जि. बाराबंकी
      - अशोक तिवारी (सिवनी में बसे)
        - शशांक तिवारी
    - हरिहर दत्त (से.नि. वा.क.अ.) — पत्नी अभिलाषा, सतना
      - अनीता — नवीन अवस्थी, जबलपुर (कटनी)
        - श्रवण, आध्यात्म
      - मन्ना (मनीषा) — संदीप तिवारी, सतना
        - सोमिल, सुनेहा
      - रीता — विकास अवस्थी, जबलपुर (रीठी)
        - विक्रमादित्य, सुरभि
      - सुनीलदत्त, सतना — निशा
        - शुभदत्त, आनंददत्त
      - रीना — प्रवीण दुबे सागर
        - प्रणव दुबे
    - गायत्री — दुर्गा प्रसाद शुक्ल, घाटमपुर
      - सुमन — राजेश मिश्रा
        - श्वेता, स्वाती
      - अनिल
      - पूनम
    - ब्रम्हदत्त — माया, पहरा
      - दुर्गा, डाली, रवि, रिंकी, नारायण, शिवा, लक्ष्मी (वन्दना) (रूपाली)

फूलकली (पिता पक्ष)

स्वर्गवास 3-11-11 रवि 2011

रामचरन पाण्डे — कान्यकुब्ज ब्रा. भरद्वाज गोत्र, महुवा जि. बांदा

- गुज्जर — दामोदर फतेहपुर
  - रज्जन तिवारी
  - हरीशंकर तिवारी
- रामगोपाल
  - राजा (महुवा)
  - रामभरोसे (तिंदवारी)
- फूलकली — पति- रामगोपाल मिश्र, पहरा (महोबा)
- रामसेवक — पं. किशोरी, बांदा
  - ममता — उमेशचन्द्र अवस्थी, बांदा
    - वीणा, गुड्डू
  - वंदना — सुभाष द्विवदी, खजुहा
    - मीतू, ऋषि
  - आराधना — राधाकान्त पाण्डे, लखनऊ
    - दीपू, शिल्पा, लड़की
  - आलोक — रश्मि, बांदा
  - पंकज — वंदना, बांदा
  - मृदुल — माधुरी, बांदा
  - लोकेश
  - साधना
- मुन्नी नया खेड़ा (रायबरेली)
  - रामशंकर मिश्र

अभिलाषा (पिता पक्ष)

रामचरन त्रिवेदी (अतर्रा) — का. ब्रा. भरद्वाज गोत्र

- रंची — शम्भू वाजपेयी
  - राम बाबू, श्याम बाबू, गनेश
- पन्नालाल — किशोरी
  - शकुन्तला (फूला) (अभिलाषा) — हरिहरदत्त, सतना
    - अनीता, मन्ना, रीता, सुनील, रीना
  - ललित — किशोर, सरिता
    - विवेकानंद, रामानंद, जनकदुलारी, ज्योती, दीपक
  - सुदामा — उर्मिला, अतर्रा
    - सुशील, अनिल, रोशनी, संतोष
  - रामकृष्ण — अंतिमा, अतर्रा
    - शालू, पुत्री, पुत्री
  - उर्मिला — परशुराम मिश्रा, भदुरी
    - नीलू, शीलू, संध्या, अतुल
  - कमला (चुनियां) — विनोद तिवारी, अतर्रा
    - बिन्दू, इन्दू, रामू
  - गोमती — सुरेश मिश्रा, अयोध्या
- झांसी
  - रानी, चन्द्रभान, पद्मा
    - विद्याभूषण, क्रिम
- विजय
  - हनुमान, राजू, विश्वनाथ

पान के पत्ते पर दशारानी का चंदन से बना चित्र

उद्यापन : कई बार दशारानी के गांड़े ले चुकने के बाद उद्यापन कर दें। दस स्त्रियां खिलायें। दस पुवा (घी तेल के मीठे) व दस गुलेला (मीठे) दही के साथ खिलायें। और अपनी सामर्थ्य अनुसार उद्यापन कर दें। उद्यापन के बाद यदि गाड़े लें तो फिर पानी फरा गुलेला के स्थान पर पुवा व गुलेला खाये जा सकते हैं।

द्वितीय संस्करण- मार्च 2000 प्रतियां : 2000
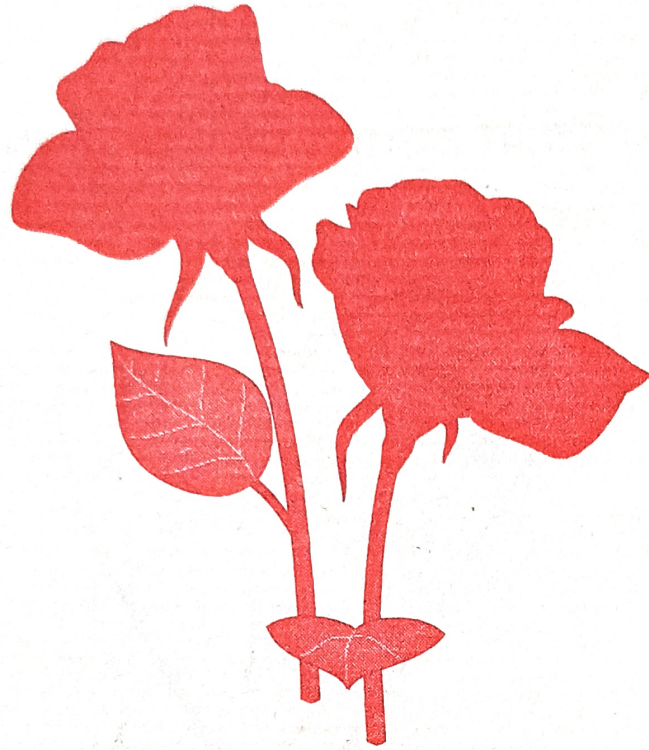
पुस्तक हेतु सम्पर्क करें -

सुनीलदत्त मिश्र

हरिनिकेतन भरहुत नगर, सतना

दूरभाष : ~~07672/ 28951~~

⇒9009931738

अथवा ⇒ 6260366119

मुद्रक : आशीष आफसेट, सतना (म.प्र.) फोन : 27809